इकाई-II

5. ललद्यद

रचनाकार

ललद्यद कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय संत-कवयित्री हैं। इनका जन्म सन् 1320 के लगभग कश्मीर स्थित पांपोर के सिमपुरा गाँव में हुआ था। उनके जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। ललद्यद को लल्लेश्वरी, लला, ललयोगेश्वरी, ललारिफा आदि नामों से भी जाना जाता है। उनका देहांत सन् 1391 के आसपास माना जाता है।

लोक-जीवन के तत्वों से प्रेरित ललद्यद की रचनाओं में तत्कालीन पंडिताऊ भाषा संस्कृत और दरबार के बोझ से दबी फारसी के स्थान पर जनता की सरल भाषा का प्रयोग हुआ है। यही कारण है कि ललद्यद की रचनाएँ सैकड़ों सालों से कश्मीरी जनता की स्मृति और वाणी में आज भी जीवित हैं। वे आधुनिक कश्मीरी भाषा का प्रमुख स्तंभ मानी जाती हैं।

विद्यार्थियों को भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना और उसके अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित कराने के उद्देश्य से यहाँ ललद्यद के चार वाखों का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। पहले वाख में ललद्यद ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासों की व्यर्थता की चर्चा की है। दूसरे में बाह्याडंबरों का विरोध करते हुए यह कहा गया है कि अंतःकरण से समभावी होने पर ही मनुष्य की चेतना व्यापक हो सकती है। दूसरे शब्दों में इस मायाजाल में कम से कम लिप्त होना चाहिए। तीसरे वाख में कवयित्री के आत्मालोचन की अभिव्यक्ति है। वे अनुभव करती हैं कि भवसागर से पार जाने के लिए सद्कर्म ही सहायक होते हैं। भेदभाव का विरोध और ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध चौथे वाख में है। ललद्यद ने आत्मज्ञान को ही सच्चा ज्ञान माना है। प्रस्तुत वाखों का अनुवाद मीरा कांत ने किया है।

प्रस्तावना प्रसंग

खिलौना माटी का ही था
एक दिन होना ही था नाश।
पुरानी चीज़ नहीं टूटे
नई की कैसे हो फिर आस।

खिलौना यह सारी दुनिया
खेलता ऊपर वाला है।
हमीं यह समझ नहीं पाते
अजब यह खेल निराला है।

–राजीव कृष्ण सक्सेना

प्रश्न

1. यहाँ माटी का खिलौना किसे कहा गया होगा?
2. 'खिलौना यह सारी दुनिया' स्पष्ट कीजिए।
3. इन पंक्तियों का संदेश क्या है?

भूमिका

ललद्यद की काव्य शैली को **वाख** कहा जाता है। जिस तरह हिंदी में कबीर के दोहे, मीरा के पद, तुलसी की चौपाई और रसखान के सवैये प्रसिद्ध हैं, उसी तरह ललद्यद के वाख प्रसिद्ध हैं। अपने वाखों के ज़रिए उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति के ऐसे रास्ते पर चलने पर ज़ोर दिया जिसका जुड़ाव जीवन से हो। उन्होंने धार्मिक आडंबरों का विरोध किया और प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया।

© SCERT not to be republished

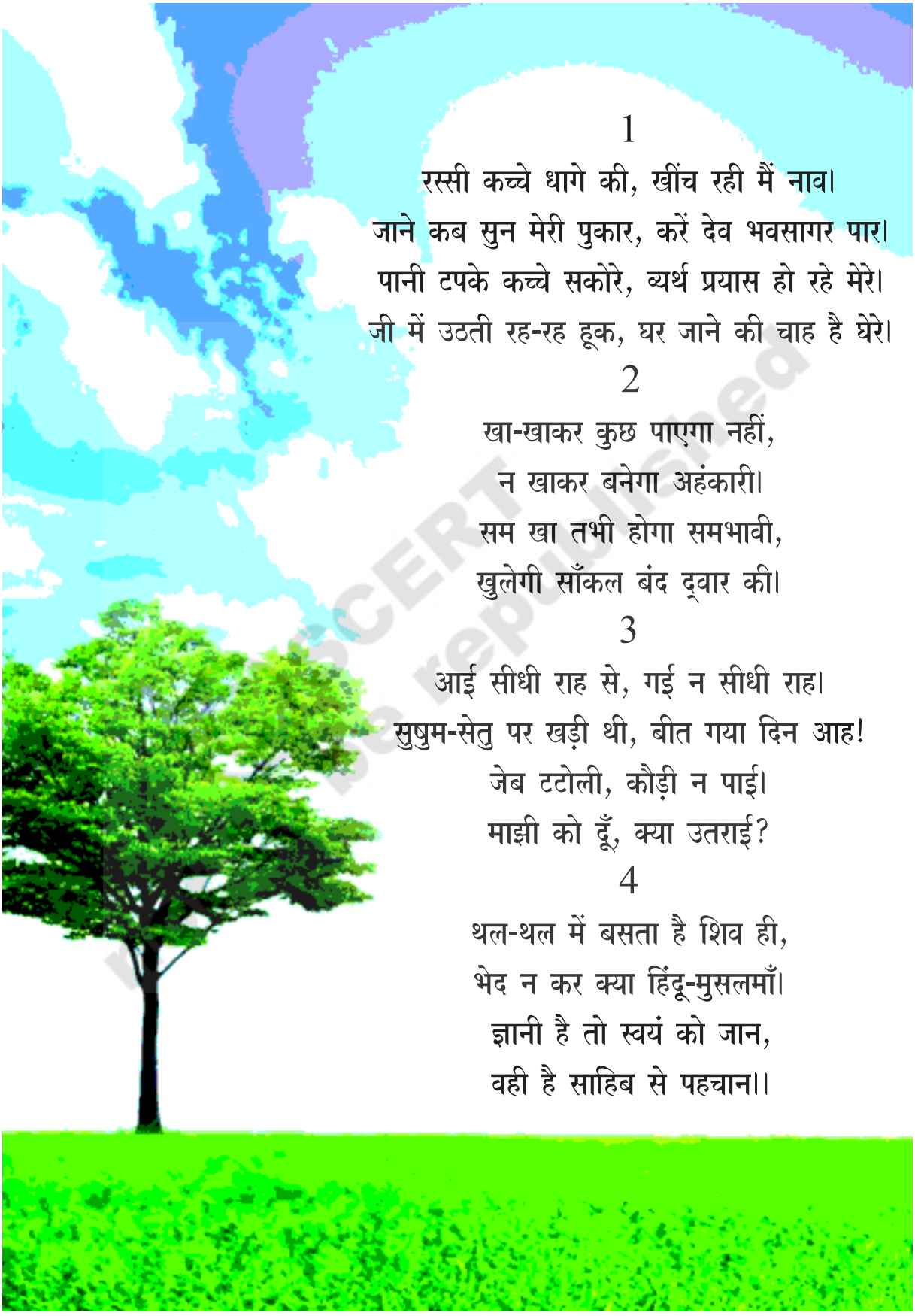

1

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।

2

खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

3

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?

4

थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमाँ।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
वही है साहिब से पहचान।।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता। लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है-
   क. आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?
   ख. आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. "ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।" यह भाव जिन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है, उन्हें लिखिए।
2. कवयित्री ने कच्चे धागे की तुलना किससे की है?
3. कवयित्री क्या प्रयास कर रही है जो व्यर्थ हो रहा है?
4. "ज्ञानी वही है जो स्वयं को पहचानता है और उसी के माध्यम से ईश्वर को जान पाता है।" यह भाव पाठ की किन पंक्तियों का है, ढूँढ़कर लिखिए।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. "खा खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।" इसके माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?
2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के प्रयत्न बेकार क्यों हो रहे हैं?
3. बंद द्वार की साँकल को किस प्रकार खोला जा सकता है? यहाँ बंद द्वार से क्या अभिप्राय है?
4. माँझी के समक्ष कवयित्री क्यों परेशान है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

अनुच्छेद पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क्या आपने उन साधु-संन्यासियों, फ़कीरों को देखा है जो हाथ में एकतारा, सारंगी, चिमटा या डफ आदि लेकर कुछ गा-गाकर सुनाते हैं। या फिर आप उन पुराने मंदिरों व दरगाहों में कभी

© SCERT not to be republished

गए हैं, जहाँ हारमोनियम, ढोलक, मंजीरों को बजाते हुए अलग किस्म के गीत गाए जाते हैं? अगर हाँ तो आप फिर ये भी जानना चाहते होंगे कि गानों से कुछ अलग तरीके की यह क्या चीज़ है। यह आजकल के गानों से भिन्न गाई जाने वाली एक विधा है। पहले समय में जब रेडियो, टी.वी., अखबार आदि नहीं थे। लोग घूम-घूमकर नेकी और भलाई के उपदेश दिया करते थे तथा लोगों में भक्ति व मानवता का भाव जगाने के लिए सूफी और संत कवियों की रचनाएँ गाते थे। ये काव्य आज भी हमारे लिए अनमोल निधि से कम नहीं हैं।

प्रश्न 1. साधु-संन्यासी-फ़कीर गीत गाते समय वाद्यों का उपयोग क्यों करते थे?

2. प्राचीन और आज के गीतों में क्या अंतर है?
3. साधु-संन्यासी-फ़कीर किसके कहने पर घूम-घूम कर नेकी और भलाई के संदेश देते होंगे?
4. आज घूम-घूमकर नेकी और भलाई के संदेश देने वाले साधु-संन्यासी-फ़कीर आदि क्यों कम हो गये हैं?
5. यदि रेडियो, टी.वी., समाचार पत्र आदि आधुनिकतम संचार के साधन न हों तो हमारे सामने कैसी समस्याएँ आ सकती हैं?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. संत कवियों ने नैतिकता पर विशेष महत्व क्यों दिया होगा?
2. मुक्ति का क्या अभिप्राय है? मनुष्य को मुक्ति कैसे मिल सकती है?
3. धार्मिक एकता की स्थापना के लिए हम क्या प्रयास कर सकते हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कवयित्री ने परमात्मा प्राप्ति का क्या उपाय बताया है?
2. कवयित्री परमात्मा प्राप्ति के मार्ग में किसे बाधक मानती है?
3. आपने कबीर को पढ़ा है। ललद्यद महिला होते हुए भी धर्म की संकीर्णताओं पर वैसे ही प्रहार करती हैं, जैसे कबीर। कबीर से तुलना करते हुए इनकी विशेषताएँ लिखिए।

© SCERT not to be republished

❖ सृजनात्मक कार्य

ललद्यद कश्मीर की कवयित्री हैं। कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। किसी स्थान के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए एक छोटी कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

❖ प्रशंसा

प्राचीन काल में अधिकतर महिलाएँ पढ़ी-लिखी नहीं होती थीं। उस काल में भी ललद्यद की कविताएँ उनकी ज्ञानपिपासुता को दर्शाती हैं, जो सराहनीय है। महिलाओं की शिक्षा समाज के लिए कितनी श्रेयस्कर है? इस पर अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

ललद्यद ने अपनी वाखों में मुहावरेदार प्रयोग किये हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

- हूक उठना
- भवसागर पार होना
- बंद साँकल खोलना
- जेब टटोलना
- कौड़ी न पाना
- थल-थल में बसना

परियोजना कार्य

भक्तिकाल में ललद्यद के अतिरिक्त तमिलनाडु की आंदाल, कर्नाटक की अक्क महादेव और राजस्थान की मीरा जैसी अन्य महिला कवयित्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

© SCERT not to be republished

इकाई-II

6. दो बैलों की कथा

रचनाकार

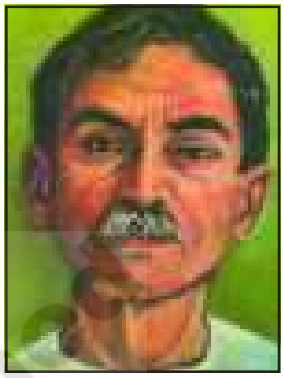

प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में बनारस के लमही गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद का बचपन अभावों में बीता और शिक्षा बी.ए. तक ही हो पाई। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और लेखन कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए। सन् 1936 में इस महान कथाकार का देहांत हो गया।

प्रेमचंद की कहानियाँ **मानसरोवर** के आठ भागों में संकलित हैं। **सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान** उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने **हंस, जागरण, माधुरी** आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया। कथा साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार का गद्य लेखन भी प्रचुर मात्रा में किया। प्रेमचंद साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया। उसकी अभिव्यक्ति उनके कथा साहित्य में मिलती है। किसानों और मज़दूरों की दयनीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं।

प्रेमचंद के कथा साहित्य का संसार बहुत व्यापक है। उसमें मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों को भी अद्भुत आत्मीयता मिली है। बड़ी से बड़ी बात को सरल भाषा में सीधे और संक्षेप में कहना प्रेमचंद के लेखन की प्रमुख विशेषता है। उनकी भाषा सरल, सजीव व मुहावरेदार है तथा उन्होंने अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया है।

प्रस्तावना प्रसंग

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना।
वो बाग़ की बहारें, वो सब का चहचहाना।
क्या बदनसीब हूँ मैं घर को तरस रहा हूँ
साथी तो हैं वतन में, मैं कैद में पड़ा हूँ।

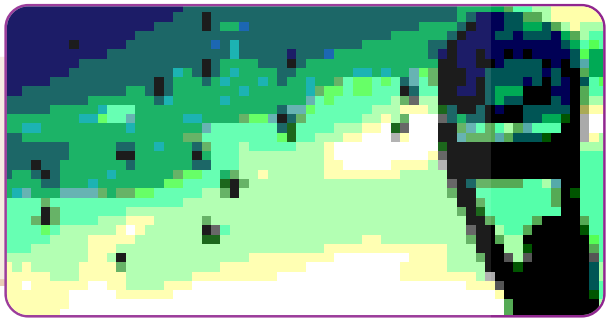

प्रश्न

1. पक्षी क्या सोच रहा है?
2. पक्षी स्वयं को बदनसीब क्यों मान रहा है?
3. पालतू एवं स्वतंत्र जानवरों में कौन अधिक सुरक्षित हैं? क्यों?

भूमिका

दो बैलों की कथा के माध्यम से प्रेमचंद ने कृषक समाज और पशुओं के भावात्मक संबंध का वर्णन किया है। इस कहानी में उन्होंने यह भी बताया है कि स्वतंत्रता सहज में नहीं मिलती, उसके लिए बार-बार संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार परोक्ष रूप से यह कहानी आज़ादी के आंदोलन की भावना से जुड़ी है। इसके साथ ही इस कहानी में प्रेमचंद ने पंचतंत्र और हितोपदेश की कथा-परंपरा का उपयोग और विकास किया है।

1

जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याही हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ़ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अमरीका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते

© SCERT not to be republished

हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधे का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफ़ों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे 'हीरा' और 'मोती'। दोनों पछाई जाति के थे- देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक -दूसरे से मूक भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे- विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाटकर अपनी थकान मिटा लिया करते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोई को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोई ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते- तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह नहीं डाला। दिल भारी हो रहा था जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों-से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक भाषा में सलाह की, एक दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में उस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद् हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा- ऐसे बैल किसी के पास न होंगे।

दूसरे ने समर्थन किया- इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए।

तीसरा बोला- बैल नहीं हैं वे उस जनम के आदमी हैं।

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।

झूरी की स्त्री ने बैलों को द्‌वार पर देखा, तो जल उठी। बोली- कैसे नमकहराम बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भाग खड़े हुए।

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका- नमकहराम क्यों हैं? चारा-दाना न दिया होगा, तो क्या करते?

स्त्री ने रोब के साथ कहा- बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।

झूरी ने चिढ़ाया- चारा मिलता तो क्यों भागतें?

स्त्री चिढ़ी- भागे इसलिए कि वे लोग तुम-जैसे बुद्‌धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं। खिलाते हैं, तो रगड़कर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूँ, कहाँ से खली और चोकर मिलता है। सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खाएँ चाहें मरें।

वही हुआ। मजूर को कड़ी ताकीद कर दी गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाए।

बैलों ने नाँद में मुँह डाला, तो फीका-फीका। न कोई चिकनाहट, न कोई रस! क्या खाएँ? आशा-भरी आँखों से द्‌वार की ओर ताकने लगे।

झूरी ने मजूर से कहा- थोड़ी-सी खली क्यों नहीं डाल देता?

'मालकिन मुझे मार ही डालेंगी'

'चुराकर डाल आ'

'न दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की-सी कहोगे।'

2

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। 'अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था।

संध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा!

नाँद की तरफ आँखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते- मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते।

हीरा ने मूक-भाषा में कहा- भागना व्यर्थ है।

मोती ने उत्तर दिया- तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।

'अबकी बड़ी मार पड़ेगी'

'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे?'

'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।'

मोती बोला- कहो तो दिखा दूँ कुछ मज़ा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।

हीरा ने समझाया- नहीं भाई! खड़े हो जाओ।

'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा!'

'नहीं हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।'

© SCERT not to be republished

मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।

दोनों दिन भर जोते जाते, डंडे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती।

प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा- अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!

'क्या करना चाहते हो?'

'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।'

'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ हो जाएगी?'

'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।'

'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।'

'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ तुड़ाकर भाग चलें।'

'हाँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?'

'इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।'

रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछे खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली- खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनके नाकों में नाथ डाल दी जाए।

उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा- अब चलते क्यों नहीं?

© SCERT not to be republished

हीरा ने कहा-चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफ़त आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लाई- दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया। और भी तेज हुए। गया ने शोर मचाया। फिर गाँव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा- मालूम होता है, राह भूल गए।

'तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।'

'उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें?'

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरने लगे। रह-रहकर आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं है।

जब पेट भर गया, दोनों ने आज़ादी का अनुभव किया, तो मस्त होकर उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिलाए और एक-दूसरे को ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहाँ तक कि वह खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। संभलकर उठा और फिर मोती से मिल गया। मोती ने देखा- खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया।

3

अरे! यह क्या? कोई साँड डौंकता चला आ रहा है। हाँ, साँड ही है। वह सामने आ पहुँचा। दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड पूरा हाथी है। उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नज़र आती। इन्हीं की तरफ आ भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है।

मोती ने मूक भाषा में कहा- बुरे फँसे। जान बचेगी? कोई उपाय सोचो।

हीरा ने चिंतित स्वर में कहा- अपने घमंड में भूला हुआ है। आरज़ू-विनती न सुनेगा।

'भाग क्यों न चलें?'

'भागना कायरता है।'

'तो फिर यहीं मरो। बंदा तो नौ-दो ग्यारह होता है।'

'और जो दौड़ाए?'

'तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द।'

© SCERT not to be republished

'उपाय यही है कि उस पर दोनों जने एक साथ चोट करें? मैं आगे से रगेदता हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा। मेरी ओर झपटे, तुम बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम है; पर दूसरा उपाय नहीं है।'

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्यों ही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड उसकी तरफ़ मुड़ा, तो हीरा ने रगेदा। साँड चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले; पर ये दोनों भी उस्ताद थे। उसे वह अवसर न देते थे। एक बार साँड झल्लाकर हीरा का अंत कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दिया। साँड क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। आखिर बेचारा ज़ख्मी होकर भागा और दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक कि साँड बेदम होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने उसे छोड़ दिया।

दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते थे।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा- मेरा जी चाहता था कि बच्चा को मार ही डालूँ।

हीरा ने तिरस्कार किया- गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।

'यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।'

'अब घर कैसे पहुँचेंगे, वह सोचो।'

'पहले कुछ खा लें, तो सोचें।'

सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस गया। हीरा मना करता रहा, पर उसने एक न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाए थे कि दो आदमी लाठियाँ लिए दौड़ पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था, निकल गया। मोती सींचे हुए खेत में था उसके खुर कीचड़ में धँसने लगे। न भाग सका। पकड़ लिया गया। हीरा ने देखा, संगी संकट में हैं, तो लौट पड़ा। फँसेगे तो दोनों फँसेंगे। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

प्रातःकाल दोनों मित्र कांजीहौस में बंद कर दिए गए।

4

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था, सब ज़मीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमज़ोर हो गए थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?

रात को भी जब कुछ भोजन न मिला तो हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। मोती से बोला- अब तो नहीं रहा जाता मोती!

© SCERT not to be republished

मोती ने सिर लटकाए हुए जवाब दिया- मुझे तो मालूम होता है, प्राण निकल रहे हैं।

'इतनी जल्द हिम्मत न हारो भाई! यहाँ से भागने का कोई उपाय निकालना चाहिए।'

'आओ दीवार तोड़ डालें।'

'मुझसे तो अब कुछ नहीं होगा।'

'बस इसी बूते पर अकड़ते थे।'

'सारी अकड़ निकल गई।'

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मज़बूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिए और ज़ोर मारा, तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा। उसने दौड़-दौड़कर दीवार पर चोटें कीं और हर चोट में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।

उसी समय कांजी हौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाज़िरी लेने आ निकला। हीरा का उजड्डपन देखकर उसने उसे कई डंडे रसीद किए और मोटी सी रस्सी से बाँध दिया।

मोती ने पड़े-पड़े कहा- आखिर मार खाई, क्या मिला?

अपने बूते-भर ज़ोर तो मार दिया।

'ऐसा ज़ोर मारना किस काम का कि और बंधन में पड़ गए।'

'जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बँधन पड़ते जाएँ।'

'जान से हाथ धोना पड़ेगा।'

'कुछ परवाह नहीं। यों भी तो मरना ही है। सोचो, दीवार खुद जाती, तो कितनी जानें बच जातीं। इतने भाई यहाँ बंद हैं। किसी की देह में जान नहीं है। दो-चार दिन और यही हाल रहा, तो सब मर जाएँगे।'

'हाँ, यह बात तो है। अच्छा, तो ला, फिर मैं भी ज़ोर लगाता हूँ।'

मोती ने भी दीवार में उसी जगह सींग मारा। थोड़ी-सी मिट्टी गिरी और फिर हिम्मत बढ़ी। फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह ज़ोर करने लगा, मानो किसी प्रतिद्वंद्वी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घंटे की ज़ोर-आज़माई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गई। उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। तीनों घोड़ियाँ सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियाँ निकलीं। इसके बाद भैंसें भी खिसक गईं; पर गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा- तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते?

एक गधे ने कहा- जो कहीं फिर पकड़ लिए जाएँ।

'तो क्या हरज है। अभी तो भागने का अवसर है।'

'हमें तो डर लगता है, हम यहीं पड़े रहेंगे।'

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा- तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाए।

मोती ने आँखों में आँसू लाकर कहा- तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए, तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ।

हीरा ने कहा- बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जाएँगे, यह तुम्हारी शरारत है।

मोती गर्व से बोला- जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता! इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आर्शिवाद देंगे।

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला और तब अपने बंधु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसके लिखने की ज़रूरत नहीं। बस, इतना ही काफ़ी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बाँध दिया गया।

5

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ बँधे पड़े रहे। किसी ने चारे का एक तृण भी न डाला। हाँ, एक बार पानी दिखा दिया जाता था। यही उनका आधार था। दोनों इतने दुर्बल हो गए थे कि उठा तक न जाता था, ठठरियाँ निकल आई थीं।

एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहाँ पचास-साठ आदमी जमा हो गए। तब दोनों मित्र निकाले गए और उनकी देखभाल होने लगी। लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते। ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीदार होता?

सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया और दोनों मित्रों के कूल्हों में उँगली गोदकर मुंशी जी से बातें करने लगा। उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे। वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई संदेह न हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया।

हीरा ने कहा- गया के घर से नाहक भागे। अब जान न बचेगी।

मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया- कहते हैं, भगवान सबके ऊपर दया करते हैं। उन्हें हमारे ऊपर क्यों दया नहीं आती?

© SCERT not to be republished

'भगवान के लिए हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उसके पास तो रहेंगे। एक बार भगवान ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था। क्या अब न बचाएँगे?'

'यह आदमी छुरी चलाएगा। देख लेना। '

'तो क्या चिंता है? माँस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी-न-किसी काम आ जाएँगे।

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे, पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे; क्योंकि वह ज़रा भी चाल धीमी हो जाने पर ज़ोर से डंडा जमा देता था।

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे हार में चरता नज़र आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनंद से बैठा पागुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिंता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुखी हैं।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज़ होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह! यह लो! अपना ही हार आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे, यही कुआँ है। मोती ने कहा- हमारा घर नगीच आ गया।

हीरा बोला- भगवान की दया है।

'मैं तो अब घर भागता हूँ।'

'यह जाने देगा?'

'इसे मैं मार गिराता हूँ।'

© SCERT not to be republished

'नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जाएँगे।'

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

झूरी ने कहा- मेरे बैल हैं।

'तुम्हारे बैल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिए आता हूँ।'

'मैं तो समझा हूँ चुराए लिए आते हो! चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है?'

'जाकर थाने में रपट कर दूँगा।'

'मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को ज़बरदस्ती पकड़ ले जाने के लिए बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढ़ियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया। दढ़ियल भागा। मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका; पर खड़ा दढ़ियल का रास्ता देख रहा था, दढ़ियल दूर खड़ा धमकियाँ दे रहा था, गालियाँ निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था। और मोती विजयी शूर की भाँति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे।

जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा- मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

'अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता'

'अब न आएगा।'

'आएगा तो दूर से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।'

'जो गोली मरवा दे?'

'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।'

'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।'

'इसलिए कि हम इतने सीधे हैं।

ज़रा देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था। उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1.भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि कार्य में पशुओं का विशेष योगदान है। आज के वैज्ञानिक युग में कृषि के क्षेत्र में पशुओं का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।

2. कुछ लोग जानवर बड़े चाव से पालते हैं; कुछ लोगों का मानना है कि जानवर चिड़ियाघर में ही अच्छे लगते हैं; कुछ लोगों का मानना है कि जानवरों को स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। आपका इस संबंध में क्या विचार है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. पाठ ध्यान से पढ़िए। उन पंक्तियों को रेखांकित कीजिए जिनसे हीरा के गुस्सैल स्वभाव का पता चलता है?
2. हीरा और मोती की दोस्ती प्रकट करने वाली पंक्तियाँ पाठ में रेखांकित कीजिए।
3. सही विकल्प पर ✓ निशान लगायें।

   गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि-

   क. गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

   ख. गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

   ग. वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था।

   घ. उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. आशय स्पष्ट कीजिए।

   क. अवश्य ही उनमें ऐसी कोई गुप्त शक्ति थी जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

   ख. उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

2. हीरा, मोती की अपेक्षा अधिक मानवतावादी था। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
3. कांजीहौस में पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती होगी?
4. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

© SCERT not to be republished

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है। इसका मतलब वे एक-दूसरे का आशय बखूबी समझ लेते हैं। यह बात तो है कि पशु-पक्षियों की मनुष्यों जैसी सुविकसित भाषा नहीं होती, पर वे सीधी-सादी आवाज़ों और क्रियाओं से अपनी बात कह पाते हैं। ये बड़ी आसानी से खुशी, भय, चेतावनी, आमंत्रण जैसी कई भावनाओं को दर्शा सकते हैं। किसी पक्षी द्वारा किए गए इशारे कोई अन्य पक्षी भी पहचान सकता है। खतरा आने पर दिया जानेवाला इशारा हर पशु-पक्षी समझते हैं।

मनुष्य जैसी सुलझी हुई भाषा पशु-पक्षी नहीं बोल पाते। इसलिए वे अपने संवाद में निरंतरता नहीं बना सकते और एक-दूसरे की अभिव्यक्तियाँ ठीक तरह से संप्रेषित नहीं कर पाते। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि इनमें कुछ विशेष नहीं है। सभी प्राणियों की अपनी कुछ अनोखी विशेषताएँ होती हैं, जो उन्हें विशेष बनाती हैं।

1. बखूबी का अर्थ क्या है?

   क. ठीक नहीं ख. अच्छी तरह ग. कठिनाई घ. बहुत

2. आवाज़ का पर्याय क्या है?

   क. चहचहाना ख. शोर ग. ध्वनि घ. भाषा

3. इस गद्यांश का उचित शीर्षक सुझाइए।
4. किसी एक प्राणी की अनोखी विशेषता बताइए।
5. मनुष्यों जैसी सुलझी हुई भाषा पशु-पक्षियों की क्यों नहीं हो सकती?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. मनुष्यों के साथ अमानुषिक व्यवहार गलत माना जाता है, किन्तु मनुष्य पशुओं के साथ अमानुषिक व्यवहार करता है। उनसे कठिन परिश्रम करवाता है। ऐसी स्थिति के कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. अगर हीरा-मोती को सही समय पर उनका मालिक झूरी न मिलता तो कहानी का अंत कैसे होता?
3. घर, गाँव, झूरी को देखते ही हीरा-मोती में साहस फूट पड़ा। मोती ने दढ़ियल को गाँव के बाहर खदेड़ दिया। हीरा और मोती ने खरीद कर ले जाते समय ही दढ़ियल का विरोध क्यों नहीं किया? इस साहस के उत्पन्न होने का क्या कारण रहा होगा?
4. कहानी में किसानों के पशु प्रेम को दर्शाया गया है। इससे पता चलता है कि किसान और उसके पशु एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं। इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

© SCERT not to be republished

5. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है। यह भूल जाते हो।" –हीरा के इस वचन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. प्रस्तुत कहानी में बैलों के माध्यम से कौन–कौन से नीति विषय उभर कर आये हैं?
2. "इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।" –मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।
3. हीरा–मोती का शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाना और प्रताड़ना सहना हमें क्या प्रेरणा देता है? विस्तार से लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

किसी ऐसे जानवर की आत्मकथा लिखिए जो चिड़ियाघर में बंदी हो गया हो।

❖ प्रशंसा

अक्सर देखा जाता है कि बच्चे अकारण ही अपनी गली के कुत्तों, बिल्लियों आदि को पत्थर मारते या सताते हैं। ऐसे बच्चों को आप किस प्रकार पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम रखने के बारे में समझाएँगे?

भाषा की बात

1. पाठ में आए मुहावरे ढूढ़िए और उनमें से किन्हीं पाँच मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. बस इतना 'ही' काफ़ी है।

   फिर मैं 'भी' ज़ोर लगाता हूँ।

   'ही', 'भी', वाक्य में किसी बात पर ज़ोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिनमें निपात का प्रयोग हुआ है।
3. रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उनके भी भेद लिखिए।

   क. दीवार का गिरना था कि अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

   ख. सहसा एक दढ़ियल आदमी जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया।

   ग. हीरा ने कहा– गया के घर से नाहक भागे।

   घ. मैं बेचूँगा तो बिकेंगे।

   ङ. अगर वह मुझे पकड़ता तो मैं बे–मारे न छोड़ता।

परियोजना कार्य

पशु–पक्षियों से संबंधित एक अन्य कहानी एकत्र कीजिए।

© SCERT not to be republished

इकाई-II

7. कैदी और कोकिला

रचनाकार

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के बाबई गाँव में सन् 1889 में हुआ। मात्र 16 वर्ष की अवस्था में वे शिक्षक बने। बाद में अध्यापन कार्य छोड़कर उन्होंने **प्रभा** पत्रिका का संपादन शुरू किया। वे देशभक्त कवि एवं प्रखर पत्रकार थे। उन्होंने **कर्मवीर** और **प्रताप** का भी संपादन किया। सन् 1968 में उनका देहांत हो गया।

हिम किरीटनी, साहित्य देवता, हिम तरंगिणी, वेणु लो गूँजे धरा उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। उन्हें पद्मभूषण एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

माखनलाल चतुर्वेती की रचनाएँ राष्ट्रीय भावना से युक्त हैं। उनमें स्वतंत्रता की चेतना के साथ देश के लिए त्याग और बलिदान की भावना मिलती है। इसीलिए उन्हें **एक भारतीय आत्मा** कहा जाता है। इस उपनाम से उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं। वे एक कवि-कार्यकर्ता थे और स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कई बार जेल गए। उन्होंने भक्ति, प्रेम और प्रकृति संबंधी कविताएँ भी लिखी हैं।

चतुर्वेदी जी कविता में शिल्प की तुलना में भाव को अधिक महत्व देते हैं। उन्होंने परंपरागत छंदबद्धता एवं तत्सम शब्दावली के स्थान पर बोलचाल की भाषा के साथ-साथ उर्दू, फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

© SCERT not to be republished

प्रस्तावना प्रसंग

वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें जीवन न रवानी है।
जो परवश होकर बहता है, वह खून नहीं है पानी है।

प्रश्न

1. 'वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं।' भाव स्पष्ट कीजिए।
2. परवश होकर बहनेवाले खून को कवि ने पानी क्यों कहा है?
3. इस कविता से आपको क्या संदेश मिलता है?

भूमिका

ब्रितानी उपनिवेशवाद के शोषण तंत्र का बारीक विश्लेषण करती **कैदी और कोकिला** कविता बहुत लोकप्रिय रही है। यह कविता भारतीय स्वाधीनता सेनानियों के साथ जेल में किए गए दुर्व्यवहारों और यातनाओं का मार्मिक साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

कवि जेल में एकाकी और उदास है। कोकिल से अपने मन का दुख, असंतोष और ब्रितानी शासन के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त करते हुए वह कहता है कि यह समय मधुर गीत गाने का नहीं बल्कि मुक्ति का गीत सुनाने का है। कवि को लगता है कि कोयल भी पूरे देश को कारागार के रूप में देखने लगी है इसलिए अर्द्धरात्रि मे चीख उठी है।

क्या गाती हो?
क्यों रह-रह जाती हो?
कोकिल बोलो तो!
क्या लाती हो?
संदेशा किसका है?
कोकिल बोलो तो!

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट-भर खाना,
मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना
जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,
शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली?

क्यों हूक पड़ी?
वेदना बोझ वाली-सी,
कोकिल बोलो तो!
क्या लूटा?
मृदुल वैभव की
रखवाली-सी,
कोकिल बोलो तो!

क्या हुई बावली?
अर्द्धरात्रि को चीखी,
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ हैं दीखीं?
कोकिल बोलो तो!

© SCERT not to be republished

क्या?-देख न सकती ज़ंजीरों का गहना?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश-राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ?-जीवन की तान,
गिट्टी पर अँगुलियों ने लिखे गान!
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।
दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,
इसलिए रात में ग़ज़ब ढा रही आली?

इस शांत समय में,
अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!
चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज
इस भाँति बो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!

काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर कल्पना काली,

मेरी काल कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लौह-श्रृंखला काली,
पहरे की हुंकृति की ब्याली,
तिस पर है गाली, ऐ आली!

इस काले संकट-सागर पर
मरने की, मदमाती!
कोकिल बोलो तो!
अपने चमकीले गीतों को
क्योंकर हो तैराती!
कोकिल बोलो तो!

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली!
तेरा नभ-भर में संचार
मेरा दस फुट का संसार!
तेरे गीत कहावें वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह!
देख विषमता तेरी-मेरी
बजा रही तिस पर रणभेरी!

इस हुंकृति पर,
अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?
कोकिल बोलो तो!
मोहन के व्रत पर,
प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!
कोकिल बोलो तो!

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। इस कविता में भी स्वतंत्रता सेनानियों की विचारधारा का अद्भुत चित्रण हुआ है। अनुमान लगाइए कि उस समय भारत देश में किस प्रकार का माहौल रहा होगा?
2. भारत की आज़ादी के लिए अनेक लोगों ने त्याग और बलिदान दिया। अपना सर्वस्व देश के लिए न्यौछावर कर दिया। आज हम स्वतंत्र हैं। स्वतंत्रता के स्थायित्व के लिए हम क्या योगदान दे सकते हैं?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया हुई?
2. कविता में तुम्हें कौनसी पंक्तियाँ अच्छी लगीं और क्यों?
3. कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बताई?
4. कवि ने अँग्रेज़ी शासन की तुलना तम के प्रभाव से क्यों की है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. भाव स्पष्ट कीजिए।
   क. मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!
   ख. हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।
   ग. चुपचाप मधुर विद्रोह-बीज, इस भाँति बो रही क्यों हो?
2. अद्‌र्धरात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा है?
3. कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?
4. हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?
5. "काली तू ..... ऐ आली!" - इन पंक्तियों में **काली** शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।
6. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
   क. किस दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?
   ख. तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह।
   ग. देख विषमता तेरी-मेरी, बजा रही तिस पर रणभेरी।

© SCERT not to be republished

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

कविता पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

था उचित कि गाँधीजी की निर्मम हत्या पर
तारे छिप जाते, काला हो जाता अंबर
केवल कलंक अवशिष्ट चंद्रमा रह जाता
कुछ और नज़ारा था जब ऊपर गई नज़र
अंबर में एक प्रतीक्षा का कौतूहल था
तारों का आनन पहले से भी उज्ज्वल था
वे पंथ किसी का जैसे ज्योतित करते हों
नभबात किसी के स्वागत में चिरचंचल था

उस महाशोक में भी मन में अभिमान था
धरती के ऊपर कुछ ऐसा बलिदान हुआ
प्रतिफलित हुआ धरती के तप से कुछ ऐसा
जिसका अमरों के आंगन में सम्मान हुआ।

1. इस कविता का उचित शीर्षक दीजिए।
2. आकाश में खुशनुमा माहौल क्यों था?
3. अमरों के आँगन से क्या अभिप्राय है?
4. लेखक को महाशोक में भी अभिमान क्यों हुआ?

अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आपके विचार में स्वतंत्रता सेनानियों और तत्कालीन अपराधियों के साथ अँग्रेज़ सरकार एक-सा व्यवहार क्यों करती थी?

© SCERT not to be republished

2. कवि चाहता तो दीवारों से भी बातें कर सकता था। उसने इस कविता को कहने के लिए कोयल को माध्यम क्यों बनाया होगा?
3. स्वतंत्रता सेनानी स्वतंत्रता से अत्यंत प्रेम करते थे, लेकिन वे हँसते-हँसते जेल भी जाते थे। इसका क्या कारण रहा होगा?
4. अनुमान लगाइए कि जेल में बंद कैदियों की दिनचर्या कैसी रहती होगी?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कवि के स्मृति पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं?
2. कैदी और कोकिला कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

देश की स्वतंत्रता एवं अखंडता को बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हुए पाँच नारे लिखिए।

❖ प्रशंसा

महात्मा गाँधी का मानना था कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। इस विचार के अनुसार अपराधियों को सुधारने की ज़िम्मेदारी भी समाज की ही है। इसके लिए क्या किया जाना चाहिए?

भाषा की बात

1. कविता पढ़िए। कविता के भाव के आधार पर इनके अर्थ लिखिए। इनसे एक-एक नए वाक्य बनाइए।

   हिमकर, मृदुल, दावानल, श्रृंखला, नसीब, विषमता

2. **काल कोठरी काली,** कवि ने इस प्रकार के ध्वन्यात्मक आवृत्ति वाले शब्दों का प्रयोग किया है। इससे भाषा का सौंदर्य बढ़ता है। कविता पढ़िए। इस प्रकार के शब्द समूह लिखिए।

परियोजना कार्य

किन्हीं दो स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए और लिखिए जिनमें एक महिला तथा एक पुरुष हों।

© SCERT not to be republished

इकाई-II

8. नाना साहब की पुत्री

रचनाकार

चपला देवी द्विवेदी युग की लेखिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पुरुष-लेखकों के साथ-साथ अनेक महिलाओं ने भी अपने-अपने लेखन से आज़ादी के आंदोलन को गति दी। उनमें से एक लेखिका चपला देवी भी रही हैं। कई बार अनेक रचनाकार इतिहास में दर्ज होने से वंचित रह जाते हैं, चपला देवी भी उन्हीं में से एक हैं।

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि सन् 1857 की क्रांति के विद्रोही नेता धुंधपंत नाना साहब की पुत्री बालिका मैना आज़ादी की नन्हीं सिपाही थीं जिसे अंग्रेजों ने जलाकर मार डाला। बालिका मैना के बलिदान की कहानी को चपला देवी ने इस गद्य रचना में प्रस्तुत किया है। यह गद्य रचना जिस शैली में लिखी गई है उसे हम रिपोर्ताज का प्रारंभिक रूप कह सकते हैं।

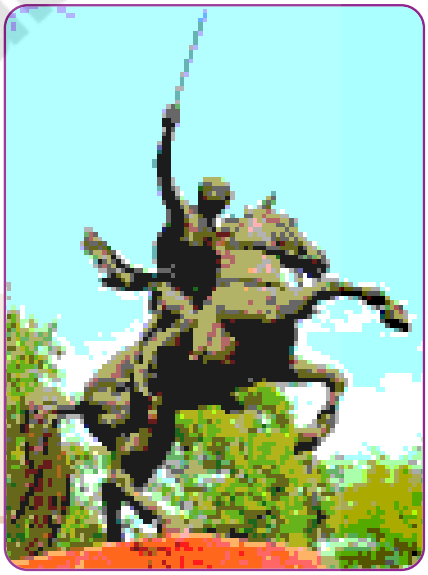

प्रस्तावना प्रसंग

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी।
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी।
हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता नारी थी।

प्रश्न

1. ऊपर दी हुई पंक्तियों में किसका वर्णन है? अनुमान लगाइए।
2. कवयित्री ने रानी के बारे में 'मनुज नहीं अवतारी थी' क्यों कहा?
3. कुछ अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताइए।

भूमिका

मातृभूमि की स्वतंत्रता और उसकी रक्षा के लिए जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर कर दिए उनके जीवन का उत्कर्ष हमारे लिए गौरव और सम्मान की बात है। उस गौरवशाली किंतु विस्मृत परंपरा से किशोर पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से इस रचना को **हिंदू पंच** के **बलिदान** अंक से लिया गया है। हिंदी गद्य के प्रारंभिक रूप को विद्यार्थी जान पाएँ इसलिए इस रचना के मुद्रण और वर्तनी में अधिक परिवर्तन नहीं किया गया है।

© SCERT not to be republished

सन् 1857 ई. के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब कानपुर में असफल होने पर जब भागने लगे, तो वे जल्दी में अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके। देवी मैना बिठूर में पिता के महल में रहती थी; पर विद्रोह दमन करने के बाद अंगरेज़ों ने बड़ी क्रूरता से उस निरीह और निरपराध देवी को अग्नि में भस्म कर दिया। उसका रोमांचकारी वर्णन पाषाण हृदय को भी एक बार द्रवीभूत कर देता है।

कानपुर में भीषण हत्याकांड करने के बाद अंगरेज़ों का सैनिक दल बिठूर की ओर गया। बिठूर में नाना साहब का राजमहल लूट लिया गया; पर उसमें बहुत थोड़ी सम्पत्ति अंगरेजों के हाथ लगी। इसके बाद अंगरेज़ों ने तोप के गोलों से नाना साहब का महल भस्म कर देने का निश्चय किया। सैनिक दल ने जब वहाँ तोपें लगायीं, उस समय महल के बरामदे में एक अत्यंत सुन्दरी बालिका आकर खड़ी हो गयी। उसे देख कर अंगरेज़ सेनापति को बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि महल लूटने के समय वह बालिका वहाँ कहीं दिखाई न दी थी।

उस बालिका ने बरामदे में खड़ी होकर अंगरेज़ सेनापति को गोले बरसाने से मना किया। उसका करुणापूर्ण मुख और अल्पवयस देखकर सेनापति को भी उस पर कुछ दया आयी। सेनापति ने उससे पूछा कि ''क्या चाहती है?''

बालिका ने शुद्ध अंगरेज़ी भाषा में उत्तर दिया,-

''क्या आप कृपा कर इस महल की रक्षा करेंगे?''

सेनापति - ''क्यों, तुम्हारा इससे क्या उद्देश्य है?''

बालिका - ''आप ही बताइए, कि यह मकान गिराने में आपका क्या उद्देश्य है?''

सेनापति- ''यह मकान विद्रोहियों के नेता नाना साहब का वास स्थान था। सरकार ने इसे विध्वंस कर देने की आज्ञा दी है।''

बालिका,- आपके विरुद्ध जिन्होंने शस्त्र उठाये थे, वे दोषी हैं; पर इस जड़ पदार्थ मकान ने आपका क्या अपराध किया है? मेरा उद्देश्य इतना ही है, कि यह स्थान मुझे बहुत प्रिय है, इसी से मैं प्रार्थना करती हूँ, कि इस मकान की रक्षा कीजिये।

© SCERT not to be republished

सेनापति ने दुःख प्रकट करते हुए कहा, कि कर्तव्य के अनुरोध से मुझे यह मकान गिराना ही होगा। इस पर उस बालिका ने अपना परिचय बताते हुए कहा, कि- ''मैं जानती हूँ, कि आप जनरल 'हे' हैं। आपकी प्यारी कन्या मेरी में और मुझ में बहुत प्रेम संबंध था। कई वर्ष पूर्व मेरी मेरे पास बराबर आती थी और मुझे हृदय से चाहती थी। उस समय आप भी हमारे यहाँ आते थे और मुझे अपनी पुत्री के ही समान प्यार करते थे। मालूम होता है, कि आप वे सब बातें भूल गये हैं। मेरी की मृत्यु से मैं बहुत दुःखी हुई थी; उसकी एक चिट्ठी मेरे पास अब तक है।''

यह सुनकर सेनापति के होश उड़ गये। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, और फिर उसने उस बालिका को भी पहचाना, और कहा,- ''अरे यह तो नाना साहब की कन्या मैना है!''

सेनापति 'हे' कुछ क्षण ठहरकर बोले- ''हाँ, मैंने तुम्हें पहिचाना, कि तुम मेरी पुत्री मेरी की सहचरी हो! किन्तु मैं जिस सरकार का नौकर हूँ, उसकी आज्ञा नहीं टाल सकता। तो भी मैं तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा।''

इसी समय प्रधान सेनापति जनरल अउटरम वहाँ पहुँचे, और उन्होंने बिगड़ कर सेनापति से कहा,- ''नाना का महल अभी तक तोप से क्यों नहीं उड़ाया गया?''

सेनापति 'हे' ने विनय पूर्वक कहा-, ''मैं इसी फिक्र में हूँ; किन्तु आपसे एक निवेदन है। क्या किसी तरह नाना का महल बच सकता है?''

अउटरम- ''गवर्नर जनरल की आज्ञा के बिना यह सम्भव नहीं। नाना साहब पर अंगरेज़ों का क्रोध बहुत अधिक है। नाना वंश या महल पर दया दिखाना असम्भव है।''

सेनापति 'हे',- ''तो लॉर्ड केनिंग (गवर्नर जनरल) को इस विषय का एक तार देना चाहिए।''

अउटरम,- ''आखिर आप ऐसा क्यो चाहते हैं? हम यह महल विध्वंश किये बिना, और नाना की लड़की को गिरफ़्तार किये बिना नहीं छोड़ सकते।''

सेनापति 'हे' मन में दुःखी होकर वहाँ से चला गया। इसके बाद जनरल अउटरम ने नाना का महल फिर घेर लिया। महल का फाटक तोड़कर अंगरेज़ सिपाही भीतर घुस गये, और मैना को खोजने लगे, किन्तु आश्चर्य है, कि सारे महल का कोना-कोना खोज डाला; पर मैना का पता नहीं लगा।

उसी दिन संध्या समय लार्ड केनिंग का एक तार आया, जिसका आशय इस प्रकार था-

''लण्डन के मंत्रिमंडल का यह मत है, कि नाना का स्मृति-चिह्न तक मिटा दिया जाये। इसलिए वहाँ की आज्ञा के विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता।''

उसी क्षण क्रूर जनरल अउटरम की आज्ञा से नाना साहब के सुविशाल राजमंदिर पर तोप के गोले बरसने लगे। घंटे भर में वह महल मिट्टी में मिला दिया गया।

© SCERT not to be republished

उस समय लंडन के सुप्रसिद्ध ''टाइम्स'' पत्र में छठी सितम्बर को यह एक लेख में लिखा गया - ''बड़े दुःख का विषय है, कि भारत-सरकार आज तक उस दुर्दान्त नाना साहब को नहीं पकड़ सकी, जिस पर समस्त अंगरेज़ जाति का भीषण क्रोध है। जब तक हम लोगों के शरीर में रक्त रहेगा, तब तक कानपुर में अंगरेज़ों के हत्याकांड का बदला लेना हम न भूलेंगे। उस दिन पार्लमेंट की 'हाउस आफ़ लार्ड्स' सभा में सर टामस 'हे' की एक रिपोर्ट पर बड़ी हँसी हुई, जिसमें हे ने नाना की कन्या पर दया दिखाने की बात लिखी थी। 'हे' के लिए निश्चय ही यह कलंक की बात है- जिस नाना ने अंगरेज़ नर-नारियों का संहार किया, उसकी कन्या के लिये क्षमा! अपना सारा जीवन युद्ध में बिता कर अन्त में वृद्धावस्था में सर टामस 'हे' एक मामूली महाराष्ट्र बालिका के सौन्दर्य पर मोहित होकर अपना कर्त्तव्य ही भूल गये! हमारे मत से नाना के पुत्र, कन्या तथा अन्य कोई भी संबंधी जहाँ कहीं मिले, मार डाला जाये। नाना की जिस कन्या से 'हे' का प्रेमालाप हुआ है, उसको उन्हीं के सामने फाँसी पर लटका देना चाहिए।''

सन् 57 के सितम्बर मास में अर्द्ध रात्रि के समय चाँदनी में एक बालिका स्वच्छ उज्ज्वल वस्त्र पहने हुए नाना साहब के भग्नावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी रो रही थी। पास ही जनरल अउटरम की सेना भी ठहरी थी। कुछ सैनिक रात्रि के समय रोने की आवाज़ सुनकर वहाँ गये। बालिका केवल रो रही थी। सैनिकों के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देती थी।

इसके बाद कराल रूपधारी जनरल अउटरम भी वहाँ पहुँच गया। वह उसे तुरंत पहिचानकर बोला- ''ओह! यह नाना की लड़की मैना है!'' पर वह बालिका किसी ओर न देखती थी और न अपने चारों ओर सैनिकों को देखकर जरा भी डरी। जनरल अउटरम ने आगे बढ़कर कहा- ''अंगरेज़ सरकार की आज्ञा से मैंने तुम्हें गिरफ़्तार किया।''

मैना उसके मुँह की ओर देखकर आर्त्त स्वर में बोली- ''मुझे कुछ समय दीजिये, जिसमें आज मैं यहाँ जी भरकर रो लूँ।''

पर पाषाण-हृदय वाले जनरल ने उसकी अंतिम इच्छा भी पूरी होने न दी। उसी समय मैना के हाथ में हथकड़ी पड़ी और वह कानपुर के किले में लाकर कैद कर दी गयी।

उस समय महाराष्ट्रीय इतिहास वेत्ता महादेव चिटनवीस के ''बाखर'' पत्र में छपा था-

''कल कानपुर के किले में एक भीषण हत्याकांड हो गया। नाना साहब की एकमात्र कन्या मैना धधकती हुई आग में जलाकर भस्म कर दी गयी। भीषण अग्नि में शांत और सरल मूर्ति उस अनुपमा बालिका को जलती देख, सबने उसे देवी समझ कर प्रणाम किया।''

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. स्वतंत्रता संग्राम में अनेक लोगों ने अपना बलिदान दिया। उनका बलिदान स्वयं तक ही सीमित न था, उनका परिवार व सगे-संबंधी भी आज़ादी की भेंट चढ़ गये। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली क्या हो सकती है? चर्चा कीजिए।
2. इस पाठ में इतिहास की एक ऐसी घटना का चित्रण है जो तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की क्रूरता को उजागर करती है। देशभक्ति एवं देश के लिए कुर्बानी की कथाएँ पढ़ने के पीछे हमारा क्या उद्देश्य हो सकता है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - मैना की अंतिम इच्छा
   - मैना की हत्या के बाद छपा समाचार
2. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन-कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया?
3. सर टामस 'हे' के मैना पर दया-भाव के क्या कारण थे?
4. 'टाइम्स' पत्र ने 6 दिसंबर को लिखा था- "बड़े दुख का विषय है कि भारत सरकार आज तक उस दुर्दांत नाना साहब को पकड़ नहीं सकी।" इस वाक्य में 'भारत सरकार' से क्या आशय है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी पर अंग्रेज़ उसे नष्ट करना चाहते थे। क्यों?
2. मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी?
3. बिठूर का राजमहल नष्ट करने के पीछे अँग्रेज़ों का क्या उद्देश्य रहा होगा?
4. बालिका मैना के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

© SCERT not to be republished

आज़ाद भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और आदर दोनों मिले। सरकारों ने उन्हें पैसों से तोलना चाहा। कई वर्ष पहले पंजाब में उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री दरबारा सिंह ने उन्हें 51 हज़ार रुपये भेंट किए। भाभी ने वे रुपये वापस कर दिए। कहा– "जब हम आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ या उपलब्धि की अपेक्षा नहीं थी। केवल देश की स्वतंत्रता ही ध्येय था। उस ध्येय पथ पर हमारे कितने ही साथी अपना सर्वस्व निछावर कर गए, शहीद हो गए। मैं चाहती हूँ कि मुझे जो 51 हज़ार रुपये दिए गए हैं, उस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बना दिया जाए, जिसमें क्रांतिकारी इतिहास का अध्ययन और अध्यापन हो, क्योंकि देश की नई पीढ़ी को इसकी बहुत आवश्यकता है।"

मुझे याद आता है सन् 1937 का ज़माना, जब कुछ क्रांतिकारी साथियों ने गाज़ियाबाद तार भेजकर भाभी से चुनाव लड़ने की प्रार्थना की थी। भाभी ने तार से उत्तर दिया– चुनाव में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। अतः लड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।

मुल्क के स्वाधीन होने के बाद की राजनीति भाभी को कभी रास नहीं आई। अनेक शीर्ष नेताओं से निकट संपर्क होने के बाद भी वे संसदीय राजनीति से दूर ही बनी रहीं। शायद इसलिए अपने जीवन का शेष हिस्सा नई पीढ़ी के निर्माण के लिए अपने विद्यालय को उन्होंने समर्पित कर दिया।

1. स्वतंत्र भारत में दुर्गा भाभी का सम्मान किस प्रकार किया गया?
2. दुर्गा भाभी ने भेंट स्वरूप प्रदान किए गए रुपये लेने से इंकार क्यों कर दिया?
3. दुर्गा भाभी संसदीय राजनीति से दूर क्यों रहीं?
4. आज़ादी के बाद उन्होंने अपने को किस प्रकार व्यस्त रखा?
5. दुर्गा भाभी के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता आप अपनाना चाहेंगे?

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. स्वाधीनता आंदोलन को आगे बढ़ाने में इस प्रकार के लेखन की क्या भूमिका रही होगी?
2. यदि आप उस समय होते तो मैना की हत्या की खबर पढ़ने के बाद आपके मन में क्या विचार आते?

© SCERT not to be republished

3. इस पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?
4. नाना साहब के बारे में आप क्या जानते हैं?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. मैना की कहानी अपने शब्दों में लिखिए।
2. इस रिपोर्ताज की लेखिका महिला हैं। खबर भी महिला के बारे में है। गुलामी के दिनों में इस तरह घटना की खबर लिखने वाले भी क्रांतिकारी माने जाने चाहिए। इन तथ्यों के आधार पर स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान पर एक लेख लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

कल्पना कीजिए कि मैना के बलिदान की यह खबर आपको रेडियो पर प्रस्तुत करनी है। इन सूचनाओं के आधार पर आप एक रेडियो समाचार तैयार करें और कक्षा में भावपूर्ण शैली में पढ़ें।

❖ प्रशंसा

आप किसी ऐसे बालक/बालिका के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए जिसने कोई बहादुरी का कार्य किया हो?

भाषा की बात

भाषा और वर्तनी का स्वरूप बदलता रहता है। इस पाठ में हिन्दी गद्य का प्रारंभिक युग व्यक्त हुआ है जो लगभग 75-80 वर्ष पहले था। इस पाठ के किसी पसंदीदा अनुच्छेद को वर्तमान हिन्दी रूप में लिखिए।

परियोजना कार्य

इस पाठ में रिपोर्ताज के प्रारंभिक रूप की झलक मिलती है लेकिन आज अखबारों में अधिकांश खबरें रिपोर्ताज की शैली में लिखी जाती हैं। आप–

क. कोई दो खबरें किसी अखबार से काटकर अपनी कॉपी में चिपकाइए और कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

ख. अपने आसपास की किसी घटना का वर्णन रिपोर्ताज शैली में कीजिए।

© SCERT not to be republished

पढ़िए - आनंद लीजिए

'सर' की उपाधि लौटा दी

रवींद्रनाथ ठाकुर एशिया के पहले लेखक थे जिन्हें साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार मिला था। ब्रिटिश सरकार ने भी उन्हें 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया था।

हमारे देश में एक ऐसा समय आया जब राष्ट्रीय आंदोलन ने एक जन-आंदोलन का रूप ले लिया। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष ने ज़ोर पकड़ा और उसे कुचलने के लिए विदेशी शासन द्वारा दमन-चक्र भी तेज़ हुआ। इस संघर्ष और दमन के काल में विदेशी शासन द्वारा दी गई 'सम्मान की उपाधियाँ' राष्ट्रीय अपमान का प्रतीक समझी जाने लगीं। अनेक भारतीयों ने ऐसी उपाधियाँ लौटा दीं।

रवींद्रनाथ ठाकुर उनमें से एक थे। उन्होंने जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के विरोध में ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई 'सर' की उपाधि लौटा दी। इसे लौटाते समय उन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर जनरल को एक पत्र लिखा जो हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास की एक दुखद घटना है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एक नए मोड़ पर पहुँच गया था। दूसरी ओर विदेशी शासकों ने एक 'रौलट एक्ट' नाम का नया कानून बना कर इस जन-आंदोलन को कुचलने के लिए पहले से भी अधिक निरंकुश नीति अपनाई। इस नए कानून को भारतवासियों ने 'काला कानून' कहा। इसके विरुद्ध देश भर में गाँधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह शुरू किया गया। इसी समय सरकार ने अमृतसर में दो राष्ट्रीय नेताओं डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू को गिरफ़्तार करके किसी अज्ञात स्थान पर बंद कर दिया था। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन इन नेताओं की गिरफ़्तारी का विरोध करने के लिए एक जनसभा अमृतसर की जलियाँवाला बाग में हुई थी। जलियाँवाला बाग एक मैदान था जो चारों ओर से मकानों से घिरा हुआ था उसमें आने-जाने का केवल एक सँकरा रास्ता था। सभा पूर्णतः शांतिपूर्वक चल रही थी। उसमें हज़ारों लोग- बूढ़े, बच्चे, स्त्री-पुरुष मौजूद थे। किंतु विदेशी शासकों के लिए यह एक चुनौती बन गई। एक अंग्रेज अफ़सर जनरल डायर फ़ौजी दस्ता लेकर वहाँ पहुँचा। उसने बाहर निकलने के एकमात्र रास्ते पर सैनिक दस्ता खड़ा कर दिया। फिर बिना किसी चेतावनी के उसने अपने फ़ौजियों को लोगों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। फ़ौजी उस समय तक अंधाधुंध गोलियाँ चलाते रहे जिस समय तक गोलियाँ खत्म नहीं हो गईं। लोगों को बाहर निकलने का अवसर नहीं दिया। स्त्रियों और छोटे-छोटे बच्चों तक को भी नहीं बख्शा गया। इस कांड में सैकड़ों लोग मारे गए और हज़ारों घायल हुए। हत्याकांड के बाद पूरे पंजाब में 'मार्शल लॉ' लगा दिया गया और जनता के साथ जघन्य और बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया गया। कई दिनों तक ब्रिटिश सरकार ने इस हत्याकांड की खबर नहीं फैलने दी। धीरे-धीरे यह खबर पंजाब के बाहर फैली तो देश-भर में अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध आक्रोश की लहर दौड़ गई। इस हत्याकांड की खबर से रवींद्रनाथ ठाकुर को भी बड़ा आघात पहुँचा।

30 मई 1919 ई. को रवींद्रनाथ ठाकुर ने इस हृदय-विदारक घटना के विरोध में 'सर' की उपाधि लौटाते हुए जो पत्र लिखा वह इस प्रकार है-

© SCERT not to be republished

6 द्वारिकानाथ लेन
कलकत्ता

महामहिम,

पंजाब सरकार ने कुछ स्थानीय गड़बड़ियों को कुचलने के लिए जो निर्मम कदम उठाए हैं, उनकी भयंकरता के कठोर धक्के ने ब्रिटिश प्रजा के रूप में हमारी असहाय स्थिति को स्पस्ट कर दिया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि अभागे लोगों को जो अमानवीय दंड दिया गया है और उसके लिए जो तरीके अपनाए गए हैं उनकी मिसाल किसी भी समय सरकार के इतिहास में न तो अतीत में मिलती है और न वर्तमान में ही। इस बात का विचार करते हुए कि जिस शक्ति के पास मानव जीवन के विनाश के लिए सबसे सबल साधन है, वह निहत्थी और साधनहीन जनता से साथ ऐसा व्यवहार करे, हम ज़ोर देकर कहना चाहते हैं कि न तो इससे कोई राजनीतिक प्रयोजन सिद्ध होता है और न इसका कोई नैतिक औचित्य ही है।

धार्मिक विचारों की दुहाई देकर यहाँ मैं अपनी सफ़ाई नहीं देना चाहता। हमारे पंजाबी भाइयों ने जो अपमान और पीड़ा सही है, उसकी कहानी दबी हुई आवाज़ के साथ व्यक्त होकर पूरे भारत में फैल गई है। इससे हम लोगों के हृदय में जो सर्वव्यापी धिक्कार की भावना पैदा हुई है, उसकी अवहेलना अंग्रेज़ी शासकों ने संभवतः अपने को इस बात पर बधाई देते हुए कर दी कि उन्होंने हमें उचित पाठ पढ़ा दिया। यहाँ के अधिकांश आंग्ल भारतीय अखबारों ने इस निर्ममता की प्रशंसा की है और कुछ अखबारों ने इस पाशविक निष्ठुरता से पूर्ण हमारे संताप का परिहास भी किया है। अधिकारियों की निर्बाध निरंकुशता का विरोध किसी ने नहीं किया है। कराहती हुई भारतीय जनता की पीड़ा एवं उनके विचारों को भी सही-सही व्यक्त नहीं किया गया है। जो सरकार न्याय का पालन करके भौतिक और नैतिक दृष्टि से महान हो सकती थी, उसे घोर राजनीतिक प्रतिरोध ने अंधा बना दिया है। इसीलिए भारतीय लोगों की सब प्रार्थनाएँ भी व्यर्थ हो गई हैं।

मैं अपने देशवासियों की इस मूक व्यथा के लिए कम-से-कम इतना तो कर ही सकता हूँ कि अपना विरोध व्यक्त करूँ और उसका परिणाम अपने ऊपर लूँ। आज सम्मान की पदवी हमारे अपमान के विसंगत संदर्भों को उभार रही है। इसीलिए मैं भी सभी विशिष्टताओं से मुक्त होकर अपने उन देशवासियों के साथ खड़ा होना चाहता हूँ जो तथाकथित तुच्छता के कारण मनुष्य के लिए अनुपयुक्त हीनता सहन करने के लिए बाध्य हुए हैं। इन्हीं उपर्युक्त सभी तथ्यों के कारण विवश होकर खेद के साथ मुझे महाराजाधिराज से प्राप्त 'सर' (नाइट) की पदवी से मुक्त होने के लिए अनुरोध करना पड़ रहा है, जिसे मैंने आपके उन पूर्वाधिकारी के हाथों से ग्रहण किया था, जिनकी महानता के प्रति मेरे मन में अब भी श्रद्धा है ।

आपका,

30 मई 1919

रवींद्रनाथ ठाकुर

लेखक एवं अनु.- कैलाशचंद्र भाटिया

© SCERT not to be republished